पाठ्यपुस्तक की कहानियाँ और भाषा शिक्षण

प्रवीण श्रीवास्तव

शुरुआती कक्षाओं में भाषा शिक्षण के सन्दर्भ में कविता और कहानियों का होना महत्त्वपूर्ण है। यह भी महत्त्वपूर्ण है कि इनपर कक्षा में काम कैसे किया जाए। लेखक कहते हैं कि कक्षा में शिक्षक द्वारा कहानी का वाचन करना व्यर्थ है। असल में, कहानी बच्चों तक तब पहुँचती है जब कहानी को कहानी की तरह ही सुनाया जाए, और बच्चों को भी उस कहानी को मौन रूप से पढ़ने के मौक़े दिए जाएँ। यदि बच्चों की मातृभाषा पाठ्यपुस्तक की भाषा से अलग है तो कहानी को बच्चों की मातृभाषा में सुनाना, बच्चों को कहानी से जुड़ने के अवसर देता है। वे यह भी कहते हैं कि बच्चे सीखते हैं, और उनके सीखने के दौरान शिक्षक को काफ़ी धैर्य रखने की ज़रूरत है। -सं.

पृष्ठभूमि

मैंने यह अनुभव किया कि बहुत-से शिक्षक, जिनमें मैं ख़ुद भी शामिल हूँ, विद्यार्थियों को सीधे कहानी को पढ़कर सुनाना शुरू कर देते हैं। कहानी पढ़ने के बाद वे बच्चों को अभ्यास कार्य के तौर पर प्रश्न-उत्तर लिखने के लिए कह देते हैं। ऐसा करते हुए कुछ दिनों में मुझे यह महसूस हुआ कि मात्र इतना करने से भाषा शिक्षण के उद्देश्यों की पूर्ति नहीं हो सकेगी क्योंकि कहानी मैं पढ़ता था, काफ़ी हद तक अभ्यास के प्रश्न-उत्तर का जवाब भी मेरे द्वारा ही दिया जाता था, या किताब में रेखांकित करवा दिया जाता था।

मुझे लगा कि कुछ ऐसा किया जाए जिससे विद्यार्थी कहानी से सीधे जुड़ सकें, कहानी के बारे में उनकी समझ बने, और इस समझ को वे व्यापक कर सकें। साथ ही, भाषा शिक्षण के व्यापक उद्देश्यों, जैसे– कहानी पढ़कर अर्थ बना पाना, सोचने के अवसर बनाना, क्षेत्रीय भाषा का समावेश, और सन्दर्भ में व्याकरण, आदि पर कार्य हो सके। यह सोचते हुए मैंने अपनी कक्षा के लिए निम्न उद्देश्य तय किए :

- बच्चे सुनी अथवा पढ़ी रचनाओं (हास्य, साहसिक, सामाजिक, आदि विषयों पर आधारित कहानी, कविता, आदि) की विषयवस्तु, घटनाओं, चित्रों और पात्रों, शीर्षक, आदि के बारे में बातचीत करें, प्रश्न पूछें, अपनी स्वतंत्र टिप्पणी दें, अपनी बात को / दावे को सही बताने के लिए तर्क दें, और अपने निष्कर्ष बनाएँ;
- कहानी, कविता अथवा अन्य सामग्री को अपनी तरह से अपनी भाषा में कहते हुए उसमें अपनी कहानी / बात जोड़ सकें; और
- अपने लेखन में विराम चिह्नों, जैसे– पूर्ण विराम, अल्प विराम, प्रश्नवाचक चिह्न, उद्धरण चिह्न, आदि को समझना शुरू करें।

तैयारी

विभिन्न स्तरों पर बच्चों के साथ काम करते हुए कई तरह के संसाधनों और प्रक्रियाओं

की तैयारी के लिए कार्य किए गए। हम सब जानते हैं कि सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में पाठ्यपुस्तक एक साधन है। महत्त्वपूर्ण यह है कि जिस अवधारणा पर हम कक्षा में कार्य कर रहे हैं उसपर बच्चों की समझ सहजता के साथ कैसे बनाई जाए, और इस दौरान जो संसाधन, सवाल, सहायक सामग्री इस्तेमाल होगी, वह पहले ही जुटाई जा सके। मैंने पाठ्यपुस्तक *भाषा भारती* कक्षा तीन से एक कहानी 'धरपटक और मुँहपटक', और कक्षा चार से 'खूँटे का घोड़ा' कहानी का चुनाव करके कार्य किया।

इन कहानियों का चुनाव मैंने इस वजह से भी किया क्योंकि इन कहानियों में बच्चों को अपनी सोच को विस्तार देने, और उसे अभिव्यक्त करने के मौक़े शामिल हैं। बच्चों का आकलन भी इस तैयारी का ही हिस्सा था। काम करने के दौरान मुझे समझ आया कि विद्यार्थी कहानी के बारे में ठीक से अभिव्यक्ति नहीं कर पा रहे थे। ऐसे बच्चों की संख्या बेहद नगण्य थी जो कहानी की समस्याओं पर अपनी बात रख सकें, और उसके आधार पर सोच सकें। पूछे गए सवालों पर बच्चों को सोच-समझकर जवाब देने, माने भाषा का सही इस्तेमाल करने में कठिनाई होती थी। इसी तरह, बच्चे कहानी के सारांश को भी व्यक्त नहीं कर पा रहे थे। इस आधार पर यह कह सकते हैं कि कहानी से उनका जुड़ाव नहीं बन पा रहा था।

चरणबद्ध गतिविधि

पहला चरण

सबसे पहले मैंने बच्चों के साथ कहानी के शब्दों पर कार्य करना शुरू किया। उदाहरण के लिए, मैंने कहानी के मुश्किल शब्दों का बुन्देली अनुवाद किया। जैसे– दण्ड बैठक के लिए डड़ें लगाना, शकरपारा के लिए गड़िया घुल्ला, सत्तू की पोटली के लिए सत्तू की पुटरिया, बियाबान जंगल के लिए घनघोर जंगल, आदि। इन शब्दों को बोर्ड पर एक तरफ़ लिखकर बच्चों के साथ उनपर चर्चा की। जिन शब्दों के भौतिक चित्र उपलब्ध हो सकते थे उनके लिए मैंने चित्रों का सहारा लेकर कार्य किया। शब्दों के चित्र मैंने अख़बार से काटकर अलग किए थे, और इस तरह बच्चों के साथ उनपर कार्य किया।

मैंने कहानी सुनाना शुरू किया। कहानी सुनाने के लिए किताब से मदद ली। लेकिन यह कहानी वाचन से फ़र्क़ था। कहानी सुनाते-सुनाते कुछ वाक्य मैंने अपनी तरफ़ से भी जोड़े, जैसा कि अकसर कहानी सुनाने में होता है। कुछ वाक्यों की संरचना भी बदली। पढ़कर सुनाने के दौरान बच्चों से सवाल पूछे ताकि उनका जुड़ाव

कहानी से बना रहे, और वो कहानी के बारे में सोच सकें। उदाहरण के तौर पर, 'धरपटक और मुँहपटक' कहानी पर जब धरपटक, मुँहपटक के यहाँ चुनौती देने जाता है तब यहाँ बच्चों से बात की कि आगे क्या होगा।

कहानी सुनाने के बाद बच्चों को कहानी के मौन वाचन के मौक़े दिए। अब जब भी कहानी पर कार्य करता हूँ, बच्चों से ये तीन काम ज़रूर करवाता हूँ। ऐसा इस वजह से, ताकि बच्चे कहानी के आधार पर सोच सकें, कहानी की विषयवस्तु से उनका जुड़ाव बन सके, और वे समझकर पढ़ सकें। इससे आगे की प्रक्रियाओं में वे बेहतर कार्य करते हैं।

मातृभाषा में कहानी सुनाना

मुझे लगा कि कहानी को बच्चों की अपनी भाषा, यानी विद्यार्थियों की मातृभाषा (बुन्देली), में सुनाया जाए तो हो सकता है बच्चों को इससे जुड़ाव बनाने और अपनी अभिव्यक्ति करने में मदद मिले।

इसके बाद, मैंने बच्चों को कहानी के आधार पर कुछ सवाल बनाने को कहा। बच्चों ने बहुत-से सवाल बनाए, हालाँकि वो सूचनात्मक सवाल थे। कहानियों पर सवाल बनाने के दौरान बच्चों को सोचने के मौक़े मिले। लेकिन इस प्रक्रिया में एक शिक्षक के रूप में धैर्य का होना बहुत ज़रूरी है क्योंकि जब बच्चों ने 'धरपटक और मुँहपटक' कहानी पर सवाल बनाए, मुझे लगा कि यह सूचनात्मक और बेहद आसान सवाल हैं। बच्चे सोचने वाले सवाल किस तरह बनाएँ, इसपर मैंने आगे कार्य किया।

'खूँटे का घोड़ा' कहानी पर सवाल बनाने के दौरान मैंने बच्चों से कहा कि हमें 'क्या' और 'कौन' वाले सवाल नहीं बनाकर 'क्यों' और 'कैसे' वाले सवाल बनाने हैं। जब मैंने बच्चों से ऐसा कहा तब ज़्यादातर बच्चे चुप थे। यहाँ मैंने बच्चों को एक सवाल बनाकर बताया। इसके बाद, बच्चों ने अलग-अलग समूहों में कुछ सवाल बनाए जिनके कुछ उदाहरण नीचे तालिका में दर्ज हैं। इस प्रक्रिया में भी बच्चों ने कुछ सूचनात्मक सवाल बनाए। इस तरह की प्रक्रिया के बाद बच्चे अब सोचने वाले सवाल बनाने की ओर बढ़े। शिक्षक के रूप में मेरे लिए यह एक सुखद एहसास है।

मुझे लगता है, बच्चों को लगातार इस तरह के मौक़े देने होंगे जिससे उनके सोचने-समझने के कौशलों का विकास हो सके।

आप देख सकते हैं कि जो सवाल बच्चों ने 'धरपटक और मुँहपटक' कहानी पर बनाए, और जो 'खूँटे का घोड़ा' कहानी पर बनाए थे, उनमें बुनियादी अन्तर है।

'धरपटक और मुँहपटक' एवं 'खूँटे का घोड़ा' कहानी पर बच्चों के द्वारा बनाए गए सवाल

धरपटक और मुँहपटक	खूँटे का घोड़ा
कहानी में कौन-कौन है?	क्या निर्जीव वस्तु घोड़े को जन्म दे सकती है?
धरपटक कहाँ जा रहा है? धरपटक ने मुँहपटक के आँगन में क्या-क्या फेंका?	क्या किसी अनजान व्यक्ति की बातों पर भरोसा करना ठीक है?
तालाब पर धरपटक को कौन मिला?	बाबा की जगह आप होते तो क्या करते?
धरपटक ने अपनी पोटली में क्या बाँधा था?	क्या पानी में आग लग सकती है?
धरपटक और मुँहपटक के बीच क्या हुआ? मुँहपटक की पत्नी ने क्या कहा? धरपटक की पत्नी भी साथ आती तो क्या होता?	बंजारा को और किस प्रकार से घोड़ा वापस दिलाया जा सकता है? इसके बारे में बताओ।

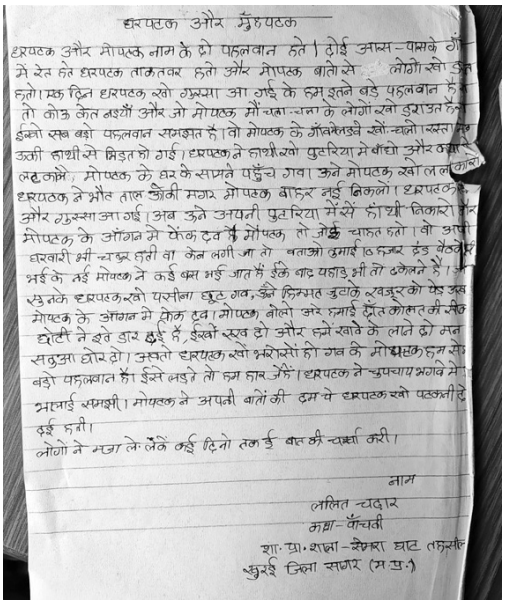

धरपटक और मुँहपटक

धरपटक और मोपटक नाम के दो पहलवान हते। दोई आस-पास के गाँ में रेत हते धरपटक ताकतवर हतो और मोपटक बातो से लोगों खो डरात हतो। एक दिन धरपटक खो गुस्सा आ गई के हम इतने बड़े पहलवान हैं तो कोऊ केत नइयाँ और जो मोपटक मौं चला-चला के लोगों खो डराउत है ईखो सब बड़ो पहलवान समझत है। वो मोपटक के गाँव लड़वे खों चलो। रस्ता में उकी हाथी से भिड़त हो गई। धरपटक ने हाथी खो पुटरिया मे बाँधो और कंधा पे लटकाके, मोपटक के घर के सामने पहुँच गव। ऊने मोपटक खो ललकारो धरपटक ने भौत ताल ठोकी मगर मोपटक बाहर नई निकलो। धरपटक को और गुस्सा आ गई। अब ऊने अपनी पुटरिया में सें हाँथी निकारो और मोपटक के आँगन मे फेंक दव। मोपटक तो जोई चाहत हतो। वो अपनी घरवारी भी चतुर हती वा केन लगी जा तो बताओ तुमाई 10 हजार दंड बैठकें भई के नई मोपटक ने कई बस भई जात हैं ईके बाद पहाड़ भी तो ढकेलने हैं। जे सुनके धरपटक खो पसीना छूट गव, ऊने हिम्मत जुटाके खजूर को पेड़ उखाड़ मोपटक के आँगन मे फेंक दव। मोपटक बोलो अरे हमाई दाँत कोलत की सींक छोटी ने इते डार दई है, ईखो रख दो और हमें खावे के लाने दो मन सतुआ घोर दो। अब तो धरपटक खों भरोसो हो गव के मोपटक हम से बड़ो पहलवान है। ईसे लड़ते तो हम हार जैहें। धरपटक ने चुपचाप भगवे में भलाई समझी। मोपटक ने अपनी बातों की दम पे धरपटक खो पटकनी दे दई हती।
लोगों ने मजा ले-लेकें कई दिनो तक ई बात की चर्चा करी।

नाम
ललित चढार
कक्षा-पाँचवी
शा. प्रा. शाला-सेमरा घाट तहसील
खुरई जिला सागर (म.प्र.)

दूसरा चरण

दूसरे चरण में, मैंने बच्चों को इस कहानी को हिन्दी-बुन्देली मिश्रित करके लोककथा की तरह ही सुनाया। विद्यार्थियों ने इस बार इसे बड़े ही मज़े से सुना, और अन्त में तालियाँ बजाकर अपनी समझ और ख़ुशी को ज़ाहिर किया। जब मैंने कुछ बच्चों से इस कहानी का सार पूछा, वे अपनी मातृभाषा में इसे अच्छी तरह बता पा रहे थे।

तीसरा चरण

बच्चों की समझ और उत्साह को देखते हुए मैंने तीसरे चरण में विद्यार्थियों को इस लोककथा के सार को उनकी मातृभाषा में उनके ही वाक्यों में घर से लिखकर लाने के लिए प्रेरित किया। कुछ बच्चे इसे बोलने से ज़्यादा विस्तार के साथ लिखकर लाए। मैंने पाया कि कुछ विद्यार्थी सारांश बोलने और लिखने में पाठ्यपुस्तक की भाषा के शब्दों का भी इस्तेमाल कर रहे थे। यहाँ ध्यान देने वाली बात यह भी है कि जो बच्चे लिख नहीं सकते थे, उन्हें मैंने कहा कि तुम सोचकर आना हम इसपर बात करेंगे, और तुम्हारे बताए हुए सार को मैं लिख दूँगा।

चौथा चरण

चौथे चरण में, मैंने विद्यार्थियों के साथ इस कहानी के पात्रों के बुन्देली संवादों पर कुछ दिन मिलकर काम किया। संवादों को छोटे-छोटे वाक्यों में लिखा और लिखवाया। रोल प्ले के माध्यम से इनका मौखिक अभ्यास भी करवाया गया।

कक्षा तीन से पाँच के विद्यार्थियों के कई समूह बनाकर उन्हें साथ में रोल प्ले करने के मौक़े दिए। वे एक दूसरे को उनके संवाद याद दिलाने, और रोल प्ले करवाने में मदद करने लगे। बच्चों को रोल प्ले करने में मज़ा आने लगा। रोल प्ले की तैयारी, और उसके आयोजन के दौरान कुछ चुनौतियाँ भी थीं। जैसे– शुरुआत में बच्चों को यह लगता था कि नाटक कैसे होगा, उन्हें थोड़ी हिचकिचाहट होती थी कि संवाद कैसे बोला जाएगा, आदि।

इसी तरह, 'खूँटे का घोड़ा' कहानी पर कार्य करते हुए इन प्रक्रियाओं के साथ-साथ व्याकरण पर भी कार्य करवाए गए। कक्षा चार में बच्चों को व्याकरणीय चिह्नों को भी पढ़ना है। इस हिस्से में, मैंने बच्चों के साथ योजक चिह्नों पर कार्य किया। यहाँ मैंने परिभाषा से शुरुआत नहीं की। मैंने बच्चों के लिए बोर्ड पर एक चिह्न खींच दिया, और बताया कि अपने पाठ से देखकर बताओ ये चिह्न (-) कहाँ-कहाँ, और किन दो शब्दों के बीच लगा हुआ है।

बच्चों ने ऐसे शब्दों की सूची बनाई, और उसे दिखाया। बच्चों ने बताया कि एक ही जैसे शब्द, बार-बार, कभी-कभी, सुबह-सुबह, जब दो बार आए हैं तो उनके बीच में इस चिह्न का इस्तेमाल हुआ है। इसी तरह, बच्चों ने बताया कि ऐसे जोड़े वाले शब्द जिनमें एक शब्द का अर्थ है और दूसरे शब्द का कोई अर्थ नहीं है, यानी उल्टा-पुल्टा, पुराना-धुराना, चाय-माय, कचोरी-मचोरी, वहाँ भी इसका इस्तेमाल हुआ है। इसी तरह, बच्चों ने यह भी बताया कि जहाँ उल्टे अर्थ वाले दो शब्द हैं, जैसे– दिन-रात,

अच्छा-बुरा, कम-ज़्यादा, वहाँ इसका इस्तेमाल किया गया है। इस तरह बच्चों ने योजक चिह्न से जुड़े कुल तीन नियमों को बताया।

इस प्रक्रिया से यह समझ बन सकी कि व्याकरणीय प्रक्रियाओं में परिभाषाओं से शुरू न किया जाए। इसके बजाय, बच्चों को सन्दर्भ में किसी पाठ पर कार्य करते हुए पैटर्न में नियमों को ढूँढ़ने के मौक़े दिए जाएँ। यह परिभाषा याद करने से अलग होगा। इसमें जब बच्चे ख़ुद नियमों को खोजेंगे, उनकी समझ बेहतर और स्थाई होगी।

चरण पाँच

पाँचवें चरण में बच्चों ने अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के सदस्यों के साथ मिलकर स्कूल में आयोजित बाल मेले में इसका प्रदर्शन किया। इस मेले में ब्लॉक के अधिकारी और बच्चों के अभिभावक भी उपस्थित थे। सभी ने बच्चों के प्रदर्शन की सराहना की।

इस चरण में स्कूल के पुस्तकालय में उपलब्ध किताबों से भी कुछ कहानियाँ चुनकर बच्चों के साथ इसी प्रक्रिया का दोहराव किया गया। बच्चे भी इन पाँचों चरणों के क्रम को समझने लगे थे, और अगले चरणों की पूर्व तैयारी ख़ुद ही अपनी समझ से करने लगे थे।

परिवेश से सीखने के संसाधन

संसाधन के रूप में हमने परिवेश से बच्चों की मातृभाषा बुन्देली को लिया। हमने इसे बातचीत, अनुवाद, और लेखन का माध्यम बनाया। बच्चों ने स्कूल या इसके आसपास उपलब्ध वस्तुओं, जैसे– लकड़ी, टोपी, गमछा, रूमाल, आदि को रोल प्ले में इस्तेमाल करने के तरीक़े ख़ुद ही सुझाए, और अपनाए। मैं अब कहानी के बीच-बीच में विद्यार्थियों से पूछता हूँ कि अगर आप इस पात्र की जगह होते तो क्या करते। ऐसे सवालों से उनको सोचने-समझने, कल्पना करने, और अभिव्यक्ति करने के मौक़े मिलते हैं।

क्या बेहतर हुआ ?

पाँचों चरणों में की गईं कई गतिविधियों से विद्यार्थी पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु, जैसे– लोककथाओं और कहानियों, में रुचि लेने लगे, और इनके चित्रों पर आपस में बातचीत करने लगे। बच्चे इनके संवादों को अपनी मातृभाषा (बुन्देली) और स्कूल की भाषा (हिन्दी) में कई तरह से बोलने और लिखने लगे। वे इन दोनों भाषाओं के बीच जुड़ाव बनाना सीखने लगे। वे सहजता से कभी बुन्देली के शब्दों का इस्तेमाल करते, और कभी हिन्दी के शब्दों का।

किताबों को पढ़ने के दौरान पैदा होने वाली उनकी नीरसता धीरे-धीरे कम होने लगी थी। वे ख़ुद ही स्कूल के झोला पुस्तकालय से किताबें लेकर पढ़ने लगे, और उनपर आपस में चर्चाएँ करने लगे। कई बार वे पुस्तकालय से किताबें लेकर आते, और शाला में आने वाले अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के सदस्यों

को इन्हें पढ़कर सुनाने के लिए अनुरोध करते। बालसभा के दिन मैं और मेरे साथी शिक्षक बच्चों को कहानियाँ पढ़कर सुना रहे हैं। बच्चे अब हमसे कहानियों में आने वाले नए शब्दों को ख़ुद आगे होकर पूछने लगे हैं। हम विद्यार्थियों को गृहकार्य के रूप में शब्दों से जुड़े अभ्यास, जैसे– विलोम शब्द, पर्यायवाची शब्द, बुन्देली शब्द, योजक शब्द, आदि भी देने लगे हैं। पढ़ते समय वे कई विराम चिह्नों के बारे में पूछने लगे हैं कि इन्हें कैसे पढ़ते हैं। इसी तरह, पुस्तकालय की किताबों को पढ़ते हुए बच्चे उनमें से भी योजक चिह्न, प्रश्नवाचक चिह्न, आदि से जुड़े नियमों को भी खोजकर बताने लगे। ऐसे मौक़ों पर हमें इनपर चर्चा करने, और इन्हें इस्तेमाल करने के तरीक़े बताने के मौक़े मिल जाते हैं। जो बच्चे इन्हें समझने लगते हैं, वे दूसरे बच्चों को भी इनके बारे में ख़ुद बताने लगते हैं।

पश्चात आकलन

1. विद्यार्थी अपनी मातृभाषा में पहले से बेहतर समझ पा रहे हैं, और अभिव्यक्त भी कर पा रहे हैं।
2. वे बोलचाल और लिखने में बुन्देली और हिन्दी के शब्दों को सहजता से इस्तेमाल करने लगे हैं। वे एक ही वस्तु, सम्बन्ध, व्यक्ति या क्रिया के लिए दोनों भाषाओं में इस्तेमाल होने वाले शब्दों को बताने लगे हैं, और इनके सम्बन्ध को समझने लगे हैं।
3. कुछ विद्यार्थी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक में दी गई लोककथा या कहानी का बुन्देली में अनुवाद करने में रुचि लेने लगे हैं। दो विद्यार्थियों ने 'धरपटक और मुँहपटक' लोककथा का अपने शब्दों में अनुवाद लिखा, और इसे रोल प्ले के रूप में मंचित किया। इसका मंचन दूसरे विद्यार्थियों से भी करवाया गया।
4. बच्चों को लोककथा या कहानी के सन्दर्भ के माध्यम से हिन्दी के शब्दों के अर्थों के अनुमान लगाने में मदद मिलने लगी है। वे इनके समतुल्य बुन्देली भाषा के शब्दों को बताने में भी अब झिझकते नहीं हैं।

चुनौतियाँ

1. शुरुआत में, हिन्दी के शब्दों के लिए सटीक बुन्देली शब्दों को खोजने में चुनौतियाँ महसूस हुईं।
2. लिखते समय कई बार वाक्य रचना करने में भी असहजता महसूस हुई क्योंकि वाक्य बहुत लम्बे-लम्बे बन रहे थे। इसी वजह से, बच्चों के लिए छोटे-छोटे संवाद बनाना एक बड़ी चुनौती थी।

प्रवीण श्रीवास्तव पिछले 26 वर्षों से प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक शिक्षक के रूप में कार्यरत हैं। इन्होंने हिन्दी साहित्य से स्नातक किया है। वर्तमान में शासकीय प्राथमिक शाला, सेमराघाट में प्रभारी प्रधानाध्यापक के तौर पर कार्यरत हैं। इन्होंने माध्यमिक शाला एवं उच्च माध्यमिक शाला में प्रभारी प्राचार्य के रूप में भी कार्य किया है। इनकी रुचि बच्चों की शिक्षा मातृभाषा में हो सके, ऐसे मुद्दों को पढ़ने-समझने में है।

सम्पर्क : praveenkhurai@gmail.com